स्नातक कला उपाधि कार्यक्रम
(बी.ए.जी. संस्कृत) (बी.ए.जी.)
सत्रांत परीक्षा
जून, 2022

बी.एस.के.ई.-141 : आयुर्वेद के मूल आधार

समय : 3 घण्टे *अधिकतम अंक : 100*

नोट : *इस प्रश्न-पत्र में **दो** खण्ड हैं । दोनों खण्ड करना **अनिवार्य** है । खण्डों में दिए गए निर्देशानुसार ही प्रश्नों के उत्तर लिखिए ।*

खण्ड 1

1. अधोलिखित प्रश्नों में से किन्हीं ***पाँच*** प्रश्नों के उत्तर लिखिए : *5×15=75*

(क) आयुर्वेद की पुनर्वसु पद्धति को विस्तारपूर्वक लिखिए ।

(ख) ग्रीष्म ऋतु के अपथ्य पर प्रकाश डालिए ।

(ग) वैदिक वाङ्मय में उपनिषदों के महत्त्व को बताते हुए प्रमुख उपनिषदों पर लेख लिखिए ।

(घ) हेमन्त ऋतु में आहार-विहार पर निबन्ध लिखिए ।

(ङ) वर्षा ऋतु में अपथ्य पर लेख लिखिए ।

(च) रोग एवं आरोग्य के लक्षण लिखते हुए रोगों के हेतु पर विस्तृत लेख लिखिए ।

खण्ड 2

2. (क) निम्नलिखित विषयों में से किन्हीं ***तीन*** विषयों पर टिप्पणियाँ लिखिए : *3×5=15*

(i) कठोपनिषद्

(ii) शरीर में वात के कार्य

(iii) महर्षि चरक द्वारा प्रतिपादित सद्वृत्त

(iv) स्वास्थ्य में निद्रा की उपयोगिता

(ख) निम्नलिखित में से किसी ***एक*** की ससन्दर्भ व्याख्या कीजिए : *10*

अन्नं ब्रह्मेति व्यजानात् । अन्नद्धयेव खल्विमानि भूतानि जायन्ते । अन्नेन जातानि जीवन्ति । अन्नं प्रयन्त्यभिसंविशन्तीति तद्विज्ञाय पुनरेव वरूणं पितरमुपससार । अधीहि भगवो ब्रह्मेति । तं होवाच । तपसा ब्रह्म विजिज्ञासस्व । तपो ब्रह्मेति । स तपोऽतप्यत । स तपस्तप्त्वा ।

अथवा

प्राणा ब्रह्मेति व्यजानात् । प्राणाद्धयेव खल्विमानि भूतानि जायन्ते । प्राणेन जातानि जीवन्ति । प्राणं प्रयन्त्यभिसंविशन्तीति । तद्विज्ञाय पुनरेव वरूणं पितरमुपससार । अधीहि भगवो ब्रह्मेति । तं होवाच । तपसा ब्रह्म विजिज्ञासस्व । तपो ब्रह्मेति । स तपोऽतप्यत । स तपस्तप्त्वा ।